

1. = संकुचितभोग oder प्राप्तभोग Comm. — 2) *wiedererlangen*: स्मृतिं प्रत्यवरुध्य Buāg. P. 2, 2, 1. — Vgl. प्रत्यवरोधन.

— समव 1) *einsperren, einschliessen*: कोशकारो यथात्मानं कीटः समवरुध्यति (= °रुणद्धि) MBu. 12, 11266. pass. *enthalten sein*: एकस्मिन्यज्ञकृतौ समवरुध्यते Pāṇāv. Br. 16, 13, 9. 19, 9, 5. — 2) *erlangen, erhalten*: °रुद्ध Buāg. P. 10, 87, 14. — 3) pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen*: समवरुध्यते im Gegens. zu युज्यते Hariv. 11778 nach der Lesart der neueren Ausg. (Nilak. macht auf die überschüssige Silbe aufmerksam).

— आ 1) *einschliessen, einsperren*: वत्सानारुध्य शादले Buāg. P. 10, 13, 7. *umzingeln, belagern*: तेषु तेष्वकशेषु शोभमारुध्यतां पुरी Hariv. 3013. — 2) *abwehren, verschleichen*: वन्धुतां श्रुचमारुणत् Buatt. 17, 49. — 3) *festhalten, herholen, beitreiben*: श्रारुन्धानां गध्यां समत्सु RV. 4, 38, 4. आ रुन्धां सर्वतैः वायुः AV. 3, 20, 10. वायवारुन्धि नो मृगान् Kauç. 127. रसम् Çat. Br. 3, 9, 3, 13. 15. 24. — 4) mod. *sich enthiüllen, sich entwickeln* (?) : चतुरारुन्धते, श्रोत्रमा°, प्राणं आ° Kauç. Up. 2, 2. श्रारुन्धे v. l. — Vgl. श्रारोधन. — caus. 1) *versperren*: पद्ममारोध्यन्मार्गम् MBu. 1, 4188. *belagern*: नगर्याः पश्चिमं द्वारं शोभमारोध्यन्तु Hariv. 3013. — 2) *belästigen*: ककिनारोध्यमाना R. 2, 96, 40; vgl. u. रुद्ध.

— समा *versperren*: तस्य मार्गं समारुध्य R. 7, 32, 42.

— उद् *hinaustreiben, verdrängen aus*: मेधावी राज्ञा सर्वेभ्यो मात्सेभ्य उद्दौत्सीत् Çat. Br. 14, 7, 4, 1.

— उप 1) *einsperren, einschliessen, eintreiben*: वडंवा उपरुन्धति मिधु-नृत्वाय TBa. 3, 8, 22, 3. Çat. Br. 13, 2, 3, 2. पशून् 3, 7, 3, 4. गाः Kuānd. Up. 4, 0, 1. अज्ञाश्चैवापरोत्स्यते पयसो ऽर्धं युगलये Hariv. 11138. उपरोधम् absol. in Verbindung mit einem loc. oder instr. P. 3, 4, 49. ब्रजोपरोधं गाः स्थापयति, ब्रज उपरोधम् und ब्रजोपरोधम् Schol. उपरुद्ध ein Gefangener Ragh. 18, 17. einen Feind, eine Stadt *einschliessen, umzingeln, belagern*: उपरुध्यारिमासीत् M. 7, 195. उपरुद्ध (बल) Kām. Nitis. 13, 67. 78 (hier अपरुद्ध gedruckt). बलैः समत्ताडपरुद्धं कुसुमपुरम् Mudrār. 41, 15. Pāṇāv. ed. orn. 33, 16. यवनेपरुद्धायतनं Buāg. P. 4, 28, 13. अयत्तरं विशितुः प्रमदोपरुद्धं (°रुद्धा?) लोकस्य *eingeschlossen, umringt* Kathās. 34, 259. — 2) *zurückhalten, behalten, nicht aus den Händen geben*: संयुय वणिज्ञां पण्यमनर्घोपेरुन्धताम् । विक्रीणातां वा विक्रितो दण्ड उत्तमसाकसः ॥ Jān. 2, 250. — 3) *belästigen, plagen, beunruhigen, behelligen*: मा मोपरोत्सीः Kāthop. 1, 21. उपरुन्धति राजानो भूतानि विजयार्थिनः MBu. 12, 3584. Ragh. 4, 83. उपरोधति R. 7, 74, 6. उपरुन्धानाः (उपरुद्धानाम् die neuere Ausg., = अपराधवताम् Nilak.) Hariv. 6038. एवं बहुभिर्वाक्यैरुपरुध्य R. 7, 73, 19. परदारान् — नेपरोद्धुमिदार्कसि 5, 47, 16. Ragh. 3, 22. Mār. P. 19, 5. उपरुध्यमानं Buāg. P. 5, 14, 5. बाष्पवेगोपरुद्धात्मन् R. Gorr. 2, 38, 25. बलीयसा 3, 43, 4. Buāg. P. 4, 28, 15. 24. 5, 26, 16. प्राणानुपरुणात्सि मे so v. a. *bedrohen, in Gefahr bringen* R. 2, 73, 41. R. Gorr. 2, 63, 41. 79, 26. उपरुध्यति मे प्राणाः 3, 73, 14. पौरा अस्मदन्वेपिणास्तपोवनमुपरुन्धति *bringen in Verwirrung* Çāk. 18, 10. 24, 8. — 4) *hind aufhalten, zurückhalten*: मा गा इत्युपरुद्धा v. l. für अवरुद्धा Çāk. 33. Etwas *hemmen, unterbrechen, stören*: प्रवृत्तं नेपरुन्धेत शनैरग्रिमिवेन्धयेत् MBu. 12, 7817. शस्त्रं द्विजातिभिर्प्राक्तं धर्मो यत्रोपरुन्धते M. 4, 348. Daçak. in Benf. Chr. 182, 17. कृत्यमारुब्धं किं

न पूर्वमुपरुद्धः R. 2, 36, 14. उपरुन्धते तपोऽनुष्ठानम् Çāk. 37, 13. उपरुद्धवृत्तिं वाप्यं कुर 90. वाष्पोपरुद्धया वाचा R. Gorr. 2, 60, 4. — 3) *verhüllen, verdecken*: रेणुः — उपरुद्धो सूर्यम् Ragh. 7, 36. उपरुद्धा च जग-ती तमसेव समावृताम् R. 2, 69, 11. — 6) = अपरुद्ध *verstoßen, von der Regierung ausschliessen*: सगरो ज्येष्ठं पुत्रमुपरुद्धत् R. 2, 34, 16. रामः किमकरोत्पापं येनैवमुपरुन्धते 30, 26. — Vgl. उपरोध ङ्ग. — caus. *verkürzen, verringern, Einbusse erleiden lassen*: धर्मार्थविद्याकालानुपरोधयन्कामसूत्रं तदङ्गविद्यायां पुरुषो ऽधीयीत Verz. d. Oxf. H. 216, b, 29.

— प्रत्युप *verstopfen*: प्रत्युपरुद्धकण्ठो न किञ्चिद्देव ऽभ्युपरिमुतातः Buāg. P. 11, 29, 35.

— समुप *hemmen, unterbrechen, stören*: शौनं हि कुर्वतः कर्म धर्मः समुपरुन्धते MBu. 13, 2148.

— नि 1) *zurückhalten, festhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen*: श्रुतरि प्रियरे दधानाः स्युः पृष्टिं निरुन्धानां श्र-ग्मन् RV. 1, 122, 7. स निरुन्ध्या नङ्गो यो यो श्रमिर्विशशक्रे बलिहृ-तः सेहोभिः 7, 6, 5. दस्युभिर्निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम् MBu. 4, 199. एतांश्चापि निरोत्स्यामि वेलैव मकरालयम् 3, 2281. 7, 5335. Hariv. 3810. Çāk. 16, 16. निवेष्टुकामं न्यरोत्सीत् Verz. d. Oxf. H. 239, a, 20. त्वं चेन्नी-चयेन गच्छसि पयः कस्तो निरोद्धुं तमः Spr. 3020. सज्जमानमकार्येयु नि-रुन्ध्युर्मन्त्रिणा नृपम् 3116. निरुद्धा मत्तिकाभिः Varān. Brh. S. 92, 2. Ka-  
tuās. 4, 36. 42, 127. Rāga-Tar. 1, 322. किं धर्मेण निरुन्धसे 4, 32. Mār. P. 102, 3. Buatt. 16, 20. वेगादहं प्रविस्तृतं पवनं निरुन्ध्याम् so v. a. *ein-  
holen* Mār. 10, 20. श्रोतः *hemmen* Suçr. 1, 102, 2. 202, 8. निरुद्धलोप-  
नसंस्तनान्नावसंनिरोधः *den Ausfluss hemmend* 64, 13. पद्मप्रातब्रजपु-  
टनिरुद्धेन बाष्पेण Spr. 1720. mit Ergänzung von रघम् so v. a. *lenken* Çāk. 169. *abhalten, abwehren*: निरुन्धानां अर्पतिं गोभिः RV. 1, 33, 4. वृ-  
त्रा 8, 2. Ait. Br. 1, 10. 3, 36. स्त्रावाडुदकात् Çat. Br. 13, 4, 2, 17. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren*: न्यरुन्धन्मुद्गलद्वयम् Buāg. P. 1, 10, 14. 11, 33. 3, 23, 50. अत्तरिते गतिर्येषां दर्शनं च न्यरुन्धत (so ist zu lesen) MBu. 4, 1053. Hariv. 11770. 11781. निज्ञातोऽयं निरुन्धानः Spr. 1736. ऐकिकामुष्मिकान्कामान्निरुध्य Mār. P. 39, 23. निरुद्धा वा-  
सनाः केन Rāga-Tar. 3, 424. Sarvadarçanas. 164, 5. Buatt. 3, 39. तदा  
श्चा निरुणाद्धि यात्राम् Varān. Brh. S. 89, 14. 86, 56. — 3) *einschliessen, einsperren*: अतिष्ठन्निरुद्धा अपः पणिनैव गावः RV. 1, 32, 11. निरुद्धश्चि-  
न्मक्षिस्तृष्यावान् 10, 28, 10. याचितो निरुन्धानः *einschliessend, nicht  
herausgebend* AV. 12, 4, 30. 5, 17, 12. Çat. Br. 3, 7, 3, 8. विप्रदृष्टं त्रिगं  
भर्ता निरुन्ध्यादेकवेष्मनि M. 11, 176. Kātuās. 34, 184. गिरिव्रजे निरु-  
द्धानां राज्ञा कृत्स्नेन मोक्षणम् MBu. 1, 409. R. 5, 16, 51. निरुद्धतोय (मकरा-  
लय) 93, 11. Buāg. P. 5, 26, 34. मनो रुद्धि निरुध्य Buāg. 8, 12. einen  
Weg *versperren*: निरुन्धानाः सतां मार्गम् Kām. Nitis. 4, 12. मार्गं निरो-  
द्धुम् Mār. 83, 23. न्यरुन्धंश्चास्य पन्थानम् Buatt. 17, 49. einen Ort *ein-  
schliessen, belagern*: निरुद्धुः — बलीर्नृपमन्दिरम् Rāga-Tar. 1, 368. रा-  
जधानीं निरुद्धवान् 6, 125. Buāg. P. 9, 6, 16. 10, 30, 4. 76, 9. *verschlissen, schliessen*: निरुद्धे नन्दिना द्वारे Kathās. 1, 46. 30, 188. निरुद्धवातापन-  
मन्दिरं R. 3, 2. श्रोत्रे निरुद्धे मया Spr. 996. die Sinne, das Herz (gegen  
die Aussenwelt) *verschlissen*: निरुध्य चेन्निग्रयामम् MBu. 3, 13633. नि-  
रुद्धचेतसो ऽतापि निरुद्धान्यखिलान्यपि Spr. 1604. मनो निरुन्ध्यात् 2867.  
द्वारं निरुन्ध्यामुम् Buāg. P. 4, 8, 80. निरुद्धकराणाय 1, 13, 53. यदा चित्तं